Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

कबीर से प्रभावित तथा समकालीन व्यक्तित्व : एक संक्षिप्त अध्ययन

उदय अढ़ाऊ

शोध छात्र, इतिहास विभाग, शास. वि"वनाथ यादव तामस्कर विज्ञान स्नातकोत्तर स्व"ाासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

Abstract

मध्य कालीन भारत में संतों द्वारा समाज को जोडने का कार्य अपने–अपने स्तर पर किया गया। अधिकतर संतों द्वारा लोगों में धार्मिक जागरण कर किसी वि"ोष पंथ या संप्रदाय को महत्व दिया गया। परंतु इन सभी के मध्य एक संत ऐसे हुए जिन्होनें पंथ, धर्म तथा संप्रदाय से उपर उठ कर मानवता, समानता और एकता का पाठ पढाया। वह संत कबीर थे। मध्य काल में वह एकमात्र संत हुए जिन्होनें सभी धर्म तथा संप्रदाय को एक छत के निचे लाकर समानता का उपदे"ा दिया।

कबीर के विचारों को आम जनों द्वारा बडी सहजता के साथ आत्मसाद किया गया, क्योकि कबीर के विचार आडंबर, पाखंड और धार्मिक कट्टरता से परे सहज, सार्थक एवं सार्वभौमिक थे। कबीर प्रथम थे जिन्होनें समाज का परिचय इस नवीन विचारधारा से कराया। इन्ही विचारधारा ने मध्य काल के अनेक संतों को कबीर की ओर आकर्"ित किया। मध्य काल के बहुत से संतों ने अपने साहित्य में कबीर को स्थान दिया। जो इन संतों पर कबीर के विचारों के प्रभाव को द"ार्ाता हैं। कबीर के बाद इनमें से कुछ संतों द्वारा समाज में कबीर के विचारों को प्रसारित किया गया।

कुंजी श्ब्दः– कबीर, संतों, साहित्य, *समानता*

1. भूमिका –

कबीर भारत के महान संतों में से एक थे, जिन्होनें भारतीय समाज और धर्म को सर्वाधिक प्रभावित किया। मध्यकाल में कबीर के विचार आधुनिक थे। कबीर के विचारों ने समाज और धर्म की एक नयी परिभाषा दी। कबीर के विचार सत्य और मानवता पर आधारित थे, जिसे सभी धर्मो ने आत्मसाद किया। प्रत्येक काल एंव परिस्थिति में कबीर के विचारों का कोई सानी नहीं। कबीर एक नाम न होकर, एक स्वच्छ, सत्य सार्थक, निष्पक्ष विचारधारा है जो कि बेजोड है।

कबीर ने अपने जीवनकाल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण किया। इसी भ्रमणकाल के समय कबीर की अन्य संतों तथा महत्वपुर्ण व्यक्तित्व से भेट हुई। इन संतों के साहित्य में कबीर का उल्लेख प्राप्त होता हैं। इन साहित्य में संतों पर हुए कबीर के विचारों का प्रभाव द्वष्टिगोचर होता हैं।

2. कबीर जीवन परिचय :–

कबीर का जन्म, माता पिता, विवाह, संतान, भ्रमण स्थल और पंथ निर्माण ये सभी ऐसे प्र"न है जिनकी सत्यता की खोज वर्तमान में भी जारी हैं। मध्य काल में इतिहास लेखन के अभाव और ऐतिहासिक प्रमाणों के कमी के कारण हम कबीर के जीवन के इन सत्य को वर्तमान समय तक पूर्ण रूप से नहीं जान पाये है, परिणाम स्वरूप जो कुछ भी थोडे बहुत प्रमाण उपलब्ध हुये है उनके आधार पर कबीर का इतिहास विद्धानों एवं कबीरपंथियों द्वारा लिखा गया जिसमें भिन्नता है।

कबीर का जन्म संभवतः 15वीं शताब्दी में बनारस मे हुआ था, कबीर की माता ने उन्हें बनारस के लहरतारा तालाब में एक टोकरी मे छोड दिया। (यह स्थल वर्तमान समय मे कबीर प्रागट्य स्थल लहरतारा के नाम से जाना जाता है।)[1] जहां नीरू–नीमा ने कबीर को रोता हुआ

देख उसे अपने साथ ले गये। इन्होनें कबीर का पालन पोषण अपने पुत्र की तरह किया।[2] वर्तमान समय में इस स्थल पर कबीर चौरा मुलगादी स्थल स्थित है। कबीर का अंतिम समय मगहर में व्यतीत हुआ, जहां आज भी एक ओर हिन्दु कबीर समाधि मंदिर तथा दुसरी ओर कबीर की मजार स्थित है।[3] यहां हिन्दु मुस्लिम एक साथ कबीर के आगे शी"ा झुकाते है।

कबीर की अपनी जीवन काल मे रामानंद, नानक, शेख तकी आदि व्यक्तित्व से भेंट हुई थी। भारत के प्रमुख पंथ जैसे, दादू दयाल पंथ, रामस्नेही पंथ, नानक पंथ तथा हिन्दु मुस्लिम धर्मो पर भी कबीर के प्रभाव को देखा जा सकता है। इनमें से कुछ पंथों के धार्मिक ग्रंथों में कबीर का उल्लेख मिलता है।

3. कबीर से प्रभावित तथा समकालीन व्यक्तित्व :–

3.1. रैदास :–

रैदास को कबीर का ि"ाष्य कहा गया है।

नामदेव कबीरू त्रिलोचनु सधना सेनु तरै।
कहि रविदास सुनहु रे संवहु हिर जीउ ते सभै सरै।[4]

इसमें कबीर ने रैदास को संतों में रविदास संत है, यह कह कर इनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट की हैं। संत रैदास की एक रचना में कबीर के परिवार का उल्लेख करते हुए कहा है कि कबीर के परिवार में बकरीद मनाना, गो–वध किया जाना, शेख व पिरो को पूजना और पिता–पुत्र के कर्मो में भारी अंतर होना बताया है। रैदास जाति के चमार थे। वे कबीर को अपना गुरू मानते थे। कबीर की प्रसिद्धी में ई"वर का स्मरण करते हुए रैदास ने बात कही है –

हरि के नाम कबीर उजागर
जनम जनम के काटे कागर[5]

3.2. पीपा :–

पीपा का जन्म लगभग 1465 में मध्य था। पीपा ने कबीर के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कहा है –

जो कलि मांझ कबीर न होते
तो ले वेद अरू कलिजुग मिलि करि भगति रसा तलि देते
नाम कबीर साच परकास्या तहां पीपै कछु पाया।[6]

संत पीपा द्वारा कबीर की जाति का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि –

जाके ईद बकरीद नित गऊ रे बध करै मानिये सेख सहीद पीरा
बाप वैसी करी प्त ऐसी धरी नांव नवखंड पहरसिध कबीरा[7]

इस कथन का उल्लेख गुरू ग्रन्थ साहेब में किया गया है जो कि रविदास के नाम से संग्रहीत है।

3.3. धन्ना :–

इन्हें जाट जाति का माना जाता है। धन्ना का जन्म लगभग 1472 ई. के आस–पास हुआ हैं। धन्ना ने अपने एक छन्द में कबीर के प्रति भक्ति भावना से प्रेरित हो कर कहा है –

गोविन्द संगि नाम देऊ मनु कबीरा।
आठ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा।।
बुनना तनना तिआगि कै प्रति चरन कबीरा
नीच कुल जोलाहरा भइयों गुनीया गहीरा।।[8]

धन्ना कबीर को पूज्यनीय मानते थे और एक ई"वर के प्रति आस्था मे वि"वास करते थे।

3.4. मतिसुन्दर :–

ऐसा माना जाता है कि मतिसुन्दर नामक संत भी कबीर के समकालीन थे। परंतु इनकी प्राप्त रचनाएं 17 वीं सदी की है।[9] मतिसुन्दर को कबीर का समकालीन बताने एक रचना प्रस्तुत की जाती है –

सोचि विचारि देखौ मन माही औसर आइ बन्यौ रे।
कहै कबीर सुनहूँ मतिसुंदर, राजाराम रमौ रे।।[10]

इस पंक्ति में कबीर ने मतिसुंदर को भगवान राम को अपनाने का उपदे"ा दिया है। मतिसुदर नामक संत कबीर के समकालीन तथा कबीर से प्रभावित थे इस मत का सर्मथन नाभादास कृत भक्त माला के आधार पर कर सकते हैं।[11]

3.5. नानक देव :–

सिख धर्म के प्रवर्तक नानक का जन्म लाहौर प्रान्त के तलवंडी नामक ग्राम में एक क्षत्री कुल में सन् 1469 में हुआ।[12] नानक के पिता का नाम कालूराम और माता का नाम तृप्ता देवी था। नानक ने गृहस्त जीवन का त्याग कर साधुओं तथा योगियों के साथ भेंट व सत्संग किया।

भम्रण काल में ही नानक की कबीर से भेंट हुई तथा कबीर सच्चे ज्ञान व व्यक्तित्व से प्रभावित होकर नानक कबीर के ि"ाष्य बन गये।[13]

नानक ने अपने पदो में गुरू रूप में कबीर की वंदना की है –

वाह कबीर गुरू पुरा है, नानक चरण के धूरा है।[14]

3.6. रामानंद :–

ऐसा माना जाता है कि कबीर ने रामानंद को गुरू स्वीकार किया था। रामानंद एक प्रतिष्ठित वैष्णव संत थे।[15] कबीर प्रन्थावली में बहुत से पद रामानंद को गुरू रूप में समर्पित किये गये हैं। इस मत को लेकर एक लोकोप्ति भी प्रचलित है कि –

एक बार रात्रि में कबीर बनारस के पंचगंगा घाट की सीढियों पर लेट गए, उन्ही सीढ़ीयों से रामानंद प्रतिदिन स्नान के लिए आया करते थे। जब रामानंद गंगा स्नान के लिए सीढ़ीयों से उतरने लगे तो अन्धेरा होने के कारण रामानंद का पैर कबीर पर पड गया। रामानंद ने राम–राम कहा कबीर ने राम नाम को गुरू मन्त्र स्वीकार कर ि"ाष्य बन गए।[16] इसके अतिरिक्त निम्न पंक्तियों के आधार पर रामानंद को कबीर का गुरू स्वीकार किया जाता है –

1) कबीर गुरू बसै बनारसी[17]
2) का"ाी में हम प्रगट भये है रामानंद चेताये[18]
3) गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागु पॉव।
बलिहारी गुरू आपने बिन गोविन्द दियो बताय।।[19]

कबीर पूर्ण मन से गुरू का आदर सम्मान करते थे। गुरू के उपदे"ा से उनके ज्ञान चक्षु खुल गए थे।

सद्गुरू की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाडियो, अनंत दिखवन हार।।[20]

मोहसीन फनी द्वारा 17 वीं सदी में लिखित ग्रन्थ दबिस्ताने मजाहिब में बताया गया है कि कबीर ने रामानंद को अपना गुरू बनाया था।[21]

श्यामसुन्दर दास, रामकुमार श्यामसुन्दर दास, रामकुमार वर्मा, पिताम्बर दत्त आदि विद्वान भी रामानंद को कबीर का समकालीन मानते हैं। ऐसा माना जाता है कि कबीर की प्रेरणा से ही रामानंद ने रविदास, सेना, पीपा को अपना ि"ाष्य बनाया था।[22]

3.7. शेख तकी :–

यह अनुमान लगया जाता है कि शेख तकी कबीर के गुरू थे। शेख तकी के रूप में दो व्यक्तित्व का उल्लेख है एक का सम्बंध कड़ा मानिकपुरी से है तथा दूसरे झूँसी से है। झूँसी से

सम्बंधित शेख तकी को ई. वेस्टकॉट ने कबीर का समकालीन बताते हुए कहा है कि कबीर उनसे मिलने झूँसी गये थे।[23]

इलाहाबाद गजेटियर के अनुसार इस शेख तकी का समय संवत् 1377 से संवत् 1441 का था।[24] यदि ये कबीर के समकालीन भी थे तो यह मानना कि कबीर के गुरू थे इस सम्बंध में कोई प्रमाण वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं।

शेख तकी जो कड़ा मानिकपुरी के थे इनकी चर्चा ''अखबारूल अधियार'' नामक ग्रंन्थ में हुई है। मौलवी गुलाम सखर की इस रचना का समय संवत् 1925 है।[25] इसमें कबीर और शेख तकी देहवासन का समय क्रम"ाः संवत् 1641, संवत् 1631 दिया गया है।

बीजक की रमैनी 48 में इस बात का उल्लेख है कि कबीर शेख तकी की प्र"ांसा सुन कर कड़ा मानिकपुर आये तथा रमैनी 63 से पता चलता है कि कबीर का शेख तकी के प्रति कुछ वि"ोष लगाव नहीं था।

3.8. संत नामदेव :–

कुछ विद्वानों का मत है कि नामदेव कबीर के समकालीन थे। इस मत का उल्लेख करते हुए सियाबाग के मोतीदास द्वारा संपादित स्वसंवेद में उल्लेख किया गया है कि कबीर नामदेव के साथ वि. सं. 1405 में पंढरपुर पधारे थे।[26] नामदेव की दासी जनाबाई के साथ कबीर का जिस स्थल पर संवाद हुआ था उस स्थल पर कबीर के ि"ाष्य कडुबाबा द्वारा कबीर मठ की स्थापना की गयी थी।[27]

आज भी कडूबाबा के उत्तराधिकारी इस मठ के माध्यम से कबीर और कडूबाबा की गुरू ि"ाष्य परंपरा को मानते आ रहे है। आज भी इस कबीर मठ के अनुयायियों का मत है कि कबीर और नामदेव समकालीन थे।

परंतु इस मत को सत्य माना जाये तो कबीर दीर्घायु प्रतीत होते है क्योंकि कबीर तथा सिकंदर लोदी के मध्य के संवाद और दोनो के मध्य विवाद की घटना का उल्लेख भी कई स्थान पर मिलता है। सिकंदर लोदी का शासनकाल सन् 1489 से 1517 के मध्य का है।[28]

3.9. कमाल :–

संत कमाल कबीर के पुत्र और ि"ाष्य माने जाते है। एक फकीर के रूप में जीवन यापन करने वाले कमाल के बारे में बहुत कम ही जानकारी उपलब्ध है। बोधसागर से प्राप्त जानकारी के अनुसार कबीर ने इन्हें प्रचार–प्रसार करने अहमदाबाद की ओर भेजा था।

इन्होंने अपने पद में कहा है कि –

दरवनम्याने नामा दर्जी, उत्तरम्याने भयो कबीर
रामचरण का बंदा है उनोका पूत कहे कमाल दोनों का बोलबाला है[29]

अर्थात् जिस प्रकार दक्षिण भारत में संत नामदेव हुए उसी प्रकार उत्तर भारत में कबीर।

एक स्थान पर उन्होंने स्वयं को मुसलमान स्वीकार किया है –

हम यवन तुम तो हिन्दू[30]

3.10. संत ज्ञानी :–

कबीर के ि"ाष्यों में से इन्हें भी एक माना जाता है। संत ज्ञानी अंकले"वर (गुजरात) के मोटा साँझा ग्राम में वि.सं. 1451 को हुआ था। भक्तमाला में कबीर के ि"ाष्य के रूप में एक मात्र संत ज्ञानी का उल्लेख मिलता है। राघोदास की भक्तमाल में कबीर और संत ज्ञानी का उल्लेख निम्न प्रकार से किया गया है–

ज्ञानी के गुरू कबीर भयै, मन के सब सं"ाय गयै।[31]

मुकुन्ददास नामक कवि ने संवत् 1708 में अपनी रचना भक्तमाला में कबीर, रामानंद और ज्ञानी का उल्लेख निम्न प्रकार से किया है –

ज्ञानी के भय कबीर सहाई, राम नाम जिन्हें दीन्ही बताई।

ज्ञानी के गुरू कबीर भयै, मन के सब सं"ाय गयै।[32]
कबीर ग्रंथावली में एक पद में कबीर और ज्ञानी का उल्लेख किया गया है–
गुरू देव ज्ञानी भयै लगानिया, सुमिरन दीन्ही हीरा।
बड़ी निसरनी नांव रामको चढ़ गयो पीर कबीरा।।

संत ज्ञानी ने अपने ग्राम मोटा साँझा में ही वि. सं. 1559 में जीवित समाधि ली थी। ज्ञानी जी द्वारा जीवन पर्यन्त कबीरमत का प्रचार–प्रसार किया गया। उनका मत था कि कबीर राम का अवतार है,[33] इसलिए वे कबीर को राम रूप में भी पूजते थे, परिणाम स्वरूप संत ज्ञानी के अनुयायियों द्वारा गुजरात में राम कबीर नाम से कबीरपंथ की एक नयी शाखा की स्थापना की गयी।

3.11. दादु दयाल :–

दादु दयाल का जन्म अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ था।[34] स्वभाव से दयालु होने के कारण इन्हें दादु दयाल कहा जाता था।

गैव मार्हि गुरूदेव मिला, पाया हम परसाद।
मस्तक मेरे कर धरया, दाया अगम अगाध।।[35]

संत ने उन्हें संत होने का पत बतला दिया। कहा जाता है कि दादु दयाल को यह ज्ञान कबीर के ि"ाष्य कमाल या संत वुडढ़न से प्राप्त हुआ था।[36] दादु दयाल कबीर की वाणी से अत्यंत प्रभावित थे। कबीर के मानवतावाद, अद्वैतवाद और सूफी प्रेम का काफी प्रभाव उन पर दिखाई देता हे।

जो था कत कबीर का सोई वर वरि हूँ।
मनसा वाचा करमना, मैं और न करि हूँ।।[37]
मेरे संत कबीर है, वर और न वरि हो।
दादू तीन तिलाक है, चित और न धरि हों।।[38]

इन पदों से दादू दयाल की कबीर के प्रति अटूट श्रद्धा का प्रमाण मिलता है।

3.12. संत दरिया साहब :–

कबीर से प्रभावित सन्तों में से एक दरिया साहब थे। इन्होंने कबीर की तरह ही निर्गुण, निरंजन और चिंतन पर बल दिया। इस कारण लोग इन्हें कबीर का अवतार मानते हैं।[39] कबीर के प्रभाव के परिणाम स्वरूप ही दरिया साहब ने मगहर, का"ाी और गाजीपुर में भ्रमण कर ज्ञान का प्रसार किया।कबीर के पद चिन्हों का अनु"ारण कर एक स्थान पर दरिया साहब ने कहा है कि –

सोड कहो जो कहहि कबीरा।
दरिया दास पद पायो हीरा।।[40]

दरिया साहब की रचना ''ज्ञान स्वरोदय'' में उन्होंने लिखा है कि '' मैं अभय लोक से आया हूँ और साहेब ही मारे सद्गुरू है। परमात्मा ही प्राप्ति का एक मात्र मार्ग निर्मल है, साहब प्रेम सिद्ध है।[41]

4. निश्कर्श :–

वर्तमान समय तक हुए शोध के आधार पर यह कहां जा सकता है कि कबीर का व्यक्तित्व का प्रभाव समकालीन संतों पर द्वष्टिगोचर होता हैं। मध्य काल के अधिकतर संतों ने अपने साहित्यें कबीर को स्थान दिया है, जो कबीर के स्वच्छ, सार्थक तथा मानवतावादी विचारों का परिणाम हैं। कबीर से प्रभावित इन संतों द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कबीर के विचारों का प्रसार किया गया। मध्य कालीन संतों के माध्यम से कबीर के विस्त्रत भ्रमण क्षेत्र की जानकारी प्राप्त होती हैं। मध्य कालीन संतों से कबीर का संबंध कबीर के महान व्यक्तित्व का घोतक हैं।

5. संदर्भ सूची :–

1. चैतन्य, मोतीदास, स्वसंवेद, स्वसंवेद कार्यालय चेतनधाम सियाबाग, बडोदा, 1956, पृष्ठ क्रमांक 65–68.
2. दास, अभिलाष, कबीर व्यक्तित्व और कर्तव्य, पारख प्रका"ाक कबीर संस्थान, इलाहबाद, 1969, पृष्ठ क्रमांक 72–73.
3. प्रसाद, राजेन्द्र, कबीरपंथ का उद्‌भव एवं प्रसार, श्री सद्‌गुरू कबीर धर्मदास साहब वं"ाावली प्रतिनिधि सभा, दामाखेडा, 2015, पृष्ठ क्रमांक 69.
4. तिवारी, रामचन्द, कबीर मीमांसा, लोकभारती प्रका"ान, इलाहबाद, 1992, पृष्ठ क्रमांक 183.
5. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 182.
6. वर्मा, रामकुमार, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 545.
7. गुरूनाथ साहब f"ारोमणी गुरू द्वारा प्रबन्धक कमेटी छंद 1293 संत रविदास द्वारा लिखित.
8. तिवारी, रामचन्द्र, पूर्वोक्त, पृष्ठ 184.
9. चतुर्वेदी, पर"ाुराम, उत्तरी भारत की संत परम्परा, लीडर प्रेस, प्रयाग, 2008, पृष्ठ क्रमांक 253–254.
10. तिवारी, परसनाथ, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 80.
11. चतुर्वेदी, पर"ाुराम, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 255.
12. वर्मा, f"ावकुमार, हिन्दी साहित्य युग और प्रवत्तियां, अ"ाोक प्रका"ान, दिल्ली, 1973, पृष्ठ क्रमांक 256.
13. किस्टन, एस.एल., भारत का इतिहास एवं राजा f"ावप्रसाद जी तवारि आईना, पृष्ठ क्रमांक 105.
14. वाह कबीर गुरू पुरा है, नानक चरम के धुरा हैं।
   – कबीर शब्दावली.
15. शास्त्री, जगदी"ादास, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 22.
16. शर्मा, व्रहादत्त, कबीर कल्पना शक्ति और काव्य सौंदर्य, भारतेन्दु भवन, f"ामला, 1969, पृष्ठ क्रमांक 33.
17. सिंह, पुष्पपाल, कबीर ग्रन्थावली, आ"ाोक प्रका"ान, नई दिल्ली, अष्टम प्रका"ान, 1988, पृष्ठ क्रमांक 245, दोहा 2.
18. उपाध्याय, अयोध्या सिंह, कबीर प्र"ानावली, नगरी प्रचारणी सभा, का"ाी, बारहवां संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 252, पद 225.
19. पूर्ववत्, पृष्ठ क्रमांक 129, दोहा 300.
20. तिवारी, पारसनाथ, कबीर ग्रन्थावली, हिन्दी परिषद प्रयाग वि"ावविधालय, प्रयाग, 1961, पृष्ठ क्रमांक 137, दोहा 13.
21. वेस्टकॉट, जी.एच., कबीर एण्ड द कबीरपंथ, क्राइसचर्च मि"ान प्रेस, कानपुर, 1907, पृष्ठ क्रमांक 37.
22. शास्त्री, जगदी"ादास, पृष्ठ क्रमांक 25.
23. वेस्टकॉट, जी.एच., कबीर एण्ड द कबीरपंथ, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 24–25.
24. मोहनसिंह, कबीर हिज बायोग्राफी, पृष्ठ क्रमांक 19.
25. वेस्टकॉट, जी. एच., पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 15–16.
26. मोतीदास, स्वसंवेद, स्वसंवेद, स्वसंवेद कार्यालय चेतनधाम, सीयाबाग, बडोदा, 1956, पृष्ठ क्रमांक 66.
27. वही.

28. वही.
29. चतुर्वेदी, पर"ाुराम, उत्तर भारत की संत परम्परा, उत्तरी भारत की संत परम्परा, लीडर प्रेस, प्रयाग, 2008, पृष्ठ क्रमांक 179.
30. वही.
31. राघोदास की भक्तमाला, श्री अगरचन्द नाइट, पृष्ठ क्रमांक 108.
32. भट्ट, कान्तिकुमार, कबीर परंपरा, का"ाी कबीर चौरा, इलाहाबाद, 1975, पृष्ठ क्रमांक 20–21.
33. वही.
34. चतुर्वेदी, पर"ाुराम, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 289.
35. रामलाल, भारत के संत महात्मा, वोरा एंड कंपनी पब्लि"ार्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई, 1957, पृष्ठ क्रमांक 524.
36. रितिमोहन, सेन, दादू (उपक्रमणिका) पृष्ठ क्रमांक 31.
37. रामलाल, पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 526.
38. प्रसाद राजेन्द्र, कबीरपंथ का उद्भव एवं प्रसार, श्री सद्गुरू कबीर धर्मदास साहेब वं"ाावली प्रतिनिधि सभा, दामाखेडा, 1999, पृष्ठ क्रमांक 116.
39. पूर्वोक्त, पृष्ठ क्रमांक 117.
40. रामलाल, पूर्वोक्त, 608.
41. वही.